८. मौर्य साम्राज्योत्तर राज्य

८.१ शुंग वंश
८.२ इंडो-यूनानी राजा
८.३ कुषाण राजा
८.४ गुप्त राजवंश
८.५ वर्धन राजवंश
८.६ पूर्वोत्तर भारत की राजसत्ताएँ

८.१ शुंग वंश

सम्राट अशोक के पश्चात मौर्य सत्ता की सामर्थ्य कम होती गई । अंतिम मौर्य नरेश का नाम बृहद्रथ था । मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने विद्रोह करके बृहद्रथ की

हत्या की और वह स्वयं राजा बन बैठा ।

८.२ इंडो-यूनानी (ग्रीक) राजा

इस कालखंड में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर प्रदेश में यूनानी राजाओं के छोटे-छोटे राज्य थे । उन राजाओं को 'इंडो-यूनानी राजा' कहते थे । प्राचीन भारतीय सिक्कों के इतिहास में इन राजाओं के सिक्के बहुत महत्त्व रखते हैं । एक ओर राजा का चित्र और दूसरी ओर देवता का चित्र; इस रूप में सिक्के ढालने की उनकी परंपरा थी । यह परंपरा कालांतर में भारत में भी प्रचलित हुई । इंडो-यूनानी राजाओं में विख्यात राजा मिनैंडर था । उसने बौद्ध भिक्खु नागसेन के साथ बौद्ध दर्शन पर शास्त्रार्थ किया था । मिनैंडर से तात्पर्य मिलिंद है । उसने भिक्खु नागसेन से पूछे प्रश्नों में से 'मिलिंदपञ्ह' ग्रंथ की निर्मिति हुई । पाली भाषा में 'पञ्ह' शब्द का अर्थ 'प्रश्न' होता है ।

मिनैंडर का चांदी का सिक्का-दोनों पहलू

८.३ कुषाण राजा

भारत में विभिन्न लोगों की टोलियाँ बाहर से निरंतर आती रहीं । उनमें मध्य एशिया से 'कुषाण' नाम की टोलियाँ आई थीं । ई. स. की पहली शताब्दी में उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेश और कश्मीर में अपना राज्य प्रस्थापित किया । भारत में सोने के सिक्के ढालने का प्रारंभ कुषाण राजाओं ने किया । सिक्कों पर गौतम बुद्ध और विविध भारतीय देवताओं की प्रतिमाओं का उपयोग करने की प्रथा कुषाण राजाओं ने प्रारंभ की । कुषाण राजा कनिष्क ने साम्राज्य का विस्तार किया ।

सम्राट कनिष्क : कनिष्क का साम्राज्य पश्चिम में काबुल से लेकर पूर्व में वाराणसी तक फैला हुआ था । कनिष्क के सोने और तांबे के सिक्के पाए गए हैं । कनिष्क के कालखंड में बौद्ध धर्म की चौथी परिषद कश्मीर में आयोजित की गई थी । कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर नामक शहर बसाया था । श्रीनगर के समीप काम्पुर नाम का गाँव ही कनिष्कपुर होना चाहिए । कनिष्क के कालखंड में अश्वघोष नामक कवि हुआ । उसने 'बुद्धचरित' और 'वज्रसूचि' ग्रंथ लिखे । कनिष्क के दरबार में प्रसिद्ध वैद्य चरक था ।

कनिष्क का सोने का सिक्का-दोनों पहलू

क्या तुम जानते हो ?

कनिष्क का सोने का सिक्का : यह सिक्का सम्राट कनिष्क ने ढाला था । इस सिक्के के दर्शनीय हिस्से पर (मुख्य पक्ष) यूनानी लिपि में 'शाओ नानो शाओ कनेष्की कोशानो' लिखा हुआ है । इसका अर्थ 'राजाधिराज कनिष्क कुषाण' है । सिक्के के पिछले हिस्से पर गौतम बुद्ध की प्रतिमा अंकित है और बगल में यूनानी लिपि में 'बोद्दो' अर्थात बुद्ध लिखा हुआ है ।

८.४ गुप्त राजवंश

ई. स. की तीसरी शताब्दी के अंत में उत्तर भारत में गुप्त राजवंश की सत्ता का उदय हुआ । लगभग तीन शताब्दियों तक गुप्त राजवंश सत्ता में था । गुप्त राजवंश के संस्थापक का नाम 'श्रीगुप्त' था । गुप्त राजवंश में समुद्रगुप्त तथा चंद्रगुप्त द्‌वितीय विशेष रूप से उल्लेखनीय सम्राट थे ।

समुद्रगुप्त : गुप्त राजा चंद्रगुप्त प्रथम के कार्यकाल में गुप्तों के राज्य विस्तार का प्रारंभ हुआ । उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने आस-पास के राजाओं को पराजित करके इस विस्तार को और अधिक बढ़ाया । उसके कार्यकाल में गुप्त सत्ता असम से पंजाब तक फैली हुई थी । उसने तमिलनाडु के कांची तक का पूर्व तटीय प्रदेश भी जीत लिया था । समुद्रगुप्त के इस विजयी अभियान से उसकी सत्ता की धाक सर्वत्र बढ़ गई थी । परिणामत: पश्चिमोत्तर राजाओं और श्रीलंका के राजाओं ने भी उसके साथ मित्रता की संधि कर ली थी । प्रयाग के स्तंभ लेख में समुद्रगुप्त का पराक्रम तथा उसके द्‌वारा पाई गई विजयों का विस्तृत वर्णन मिलता है । यह लेख 'प्रयागप्रशस्ति' के रूप में विख्यात है । इसे 'इलाहाबाद प्रशस्ति' भी कहा जाता है। समुद्रगुप्त वीणा वादन में प्रवीण था । समुद्रगुप्त ने विभिन्न प्रतिमाओंवाले सिक्के ढाले थे । उनमें एक सिक्का ऐसा है; जिसमें वह स्वयं वीणा बजाते हुए दिखाई देता है । उसपर 'समुद्रगुप्त' शब्द अंकित है ।

समुद्रगुप्त का सोने का सिक्का - दोनों पहलू

चंद्रगुप्त दूसरा (द्‌वितीय) : चंद्रगुप्त द्‌वितीय समुद्रगुप्त का बेटा था । उसने गुप्त साम्राज्य को पश्चिमोत्तर में बढ़ाया । उसने मालवा, गुजरात और सौराष्ट्र जीत लिये । चंद्रगुप्त द्‌वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक वंश के रुद्रसेन द्‌वितीय से कराया । इस तरह दक्षिण की बलशाली वाकाटक सत्ता के साथ संबंध बना लिये। दिल्ली के निकट महरौली में एक लौहस्तंभ है । यह लौहस्तंभ डेढ़ हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है । फिर भी उसमें जंग नहीं लगा है । यह लौहस्तंभ प्राचीन भारतीयों द्‌वारा तकनीक में की गई उन्नति का प्रतीक है । इस लौहस्तंभ पर अंकित लेख में 'चंद्र' नामक राजा के उल्लेख के आधार पर यह माना जाता है कि यह लौहस्तंभ चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कालखंड का है । चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कार्यकाल में बौद्‌ध भिक्खु 'फाहियान' चीन से भारत में आया था । उसने अपनी भारत यात्रा का वर्णन लिख रखा है । उसमें गुप्त साम्राज्य की उत्तम राज्य प्रशासन

क्या तुम जानते हो ?

भारत में चीनी यात्री-फाहियान चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कार्यकाल में आया था । अपने यात्रा वर्णन में उसने गुप्तकालीन समाज जीवन को चित्रित किया है । वह कहता है, भारत में बड़े- बड़े और समृद्‌ध नगर हैं । इन नगरों में यात्रियों के लिए अनेक धर्मार्थ संस्थाएँ भी हैं । नगरों में अस्पताल हैं । वहाँ निर्धनों के लिए नि:शुल्क वैद्‌यकीय सेवाएँ उपलब्ध होती हैं । भव्य विहार और मंदिर हैं । लोगों को व्यवसाय चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता है । लोगों के कहीं भी जाने पर प्रतिबंध नहीं लगा हुआ है । सरकारी अधिकारियों एवं सैनिकों को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है । यहाँ के लोग शराब का सेवन नहीं करते । हिंसा नहीं करते । गुप्त राज्य प्रशासन सुचारु रूप से चलाया जाता है ।

की जानकारी मिलती है ।

८.५ वर्धन राजवंश

गुप्त साम्राज्य का प्रभाव कम होने पर उत्तर भारत में कई राज्यों का उदय हुआ । उनमें से एक वर्धन राजवंश था । दिल्ली के निकट थानेसर नामक स्थान पर प्रभाकर वर्धन नाम का राजा राज्य करता था । उसके कालखंड में वर्धन राजवंश प्रभावी बन गया । हर्षवर्धन उसका बेटा था । हर्षवर्धन ने वर्धन साम्राज्य का विस्तार किया । उसके कार्यकाल में वर्धन साम्राज्य का विस्तार उत्तर में नेपाल, दक्षिण में नर्मदा नदी, पूर्व में असम और पश्चिम में गुजरात तक हुआ था । प्राचीन असम को कामरूप कहते हैं । वहाँ का राजा भास्कर वर्मन से उसके मित्रता के संबंध थे । हर्षवर्धन ने अपना राजदूत चीनी दरबार में भेजा था । हर्षवर्धन ने चीन के सम्राट के साथ मित्रता के संबंध प्रस्थापित किए थे । उसने अपनी राजधानी कन्नौज में प्रस्थापित की । उसके कार्यकाल में व्यापार में समृद्धि हुई । हर्षवर्धन राज्य की आय का बहुत बड़ा हिस्सा प्रजा के हितों के लिए उपयोग में लाता था । प्रत्येक पाँच वर्षों में वह अपनी संपूर्ण संपत्ति प्रजा में दान कर देता था ।

हर्षवर्धन के दरबार में राजकवि बाणभट्ट था । उसने हर्षवर्धन के जीवन पर 'हर्षचरित' ग्रंथ लिखा । उसी के आधार पर हर्षवर्धन के कार्यकाल की जानकारी प्राप्त होती है । हर्षवर्धन ने बौद्‌ध धर्म का स्वीकार किया था । उसने अन्य धर्मों को भी उदार प्रश्रय दिया था । हर्षवर्धन ने तीन संस्कृत नाटक 'रत्नावली', 'नागानंद' और 'प्रियदर्शिका' लिखे । उसके समय में युआन श्वांग नामक बौद्‌ध भिक्खु चीन से भारत आया था । उसने संपूर्ण भारत में भ्रमण किया । वह नालंदा विश्वविद्‌यालय में दो वर्ष रहा था । चीन में जाने के पश्चात उसने बौद्‌ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया ।

८.६ पूर्वोत्तर भारत की राजसत्ताएँ

पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर प्रदेश की उलूपी राजकन्या का विवाह अर्जुन के साथ हुआ था । यह कथा महाभारत में उल्लिखित है । ई. स. चौथी शताब्दी

युआन श्वांग

क्या तुम जानते हो ?

युआन श्वांग ने संपूर्ण भारत में भ्रमण किया । उसने महाराष्ट्र के लोगों के बारे में बड़े गौरवपूर्ण शब्द कहे हैं । वह कहता है-महाराष्ट्र के लोग स्वाभिमानी हैं । उनपर कोई उपकार करे तो वे सदैव उस उपकार को याद रखते हैं परंतु यदि कोई उनका अपमान करे तो वे उसे छोड़ते नहीं हैं । अपने प्राणों की परवाह न कर वे संकटग्रस्तों की सहायता करते हैं । शरणागत के साथ विश्वासघात नहीं करते ।

नालंदा विश्वविद्‌यालय

में 'कामरूप' राज्य का उदय हुआ । पुष्यवर्मन कामरूप राज्य का संस्थापक था । इसका उल्लेख इलाहाबाद में समुद्रगुप्त द्‌वारा निर्मित स्तंभलेख में मिलता है । कामरूप राजाओं के अनेक उकेरे हुए लेख पाए जाते हैं । महाभारत और रामायण महाकाव्यों में कामरूप का उल्लेख 'प्राग्ज्योतिष' नाम से हुआ है । प्राग्ज्योतिषपुर उस राज्य की राजधानी थी । प्राग्ज्योतिषपुर से तात्पर्य वर्तमान असम राज्य के गुवाहाटी शहर से है । 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' पुस्तक में उसका उल्लेख 'किरहादिया' अर्थात 'किरात लोगों का प्रदेश' रूप में किया गया है । कामरूप राज्य का विस्तार ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी, भूटान, बंगाल के कुछ क्षेत्र और बिहार के कुछ हिस्से में हुआ था । पूर्वोत्तर भारत के 'कामरूप राज्य' में युआन श्वांग गया था । उस समय भास्कर वर्मन वहाँ का राजा था ।

इस पाठ में हमने मौर्योत्तर कालखंड में उत्तर भारत और वहाँ की विभिन्न राजसत्ताओं का परिचय प्राप्त किया । साथ ही हमने यह भी देखा कि उस समय पूर्वोत्तर भारत में क्या परिस्थिति थी । अगले पाठ में हम समकालीन दक्षिण भारत की राजसत्ताओं का परिचय प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

भारतीय परंपरा के अनुसार प्राचीन समय में कश्मीर का नाम 'कश्यपपुर' था । यूनानी इतिहासकारों ने कश्यपपुर का उल्लेख कैस्पैपिरास, कैस्पैटिरोक और कैस्पेरिया के रूप में किया है । महाभारत के समय में वहाँ कंबोज राजवंश के राजा राज्य करते थे । सम्राट अशोक के कार्यकाल में कश्मीर मौर्य साम्राज्य में विलीन हुआ था । ई. स. सातवीं शताब्दी में कश्मीर में कर्कोट राजवंश का राज्य था । कल्हण ने अपने राजतरंगिणी ग्रंथ में इसकी जानकारी दी है ।

स्वाध्याय

१. **बताओ तो :**

(१) भारत में सोने के सिक्के ढालने का प्रारंभ करनेवाले राजा ।

(२) कनिष्क द्‌वारा कश्मीर में बसाया गया शहर ।

(३) वीणा वादन में प्रवीण राजा ।

(४) कामरूप से तात्पर्य ।

२. **पाठ में दिए गए मानचित्र का निरीक्षण करके गुप्त साम्राज्य के आधुनिक शहरों के नामों की सूची बनाओ :**

३. **विचार-विमर्श करो और लिखो :**

(१) सम्राट कनिष्क

(२) महरौली का लौहस्तंभ

४. **पाठ में उल्लिखित विभिन्न ग्रंथों और ग्रंथकारों के नामों की सूची बनाओ :**

५. **गुप्त राजवंश और वर्धन राजवंश की तुलनात्मक तालिका निम्न मुद्दों के आधार पर तैयार करो :**

मुद्दे	गुप्त राजवंश	वर्धन राजवंश
संस्थापक		
राज्यविस्तार		
कार्य		

६. **शब्द पहेली हल करो :**

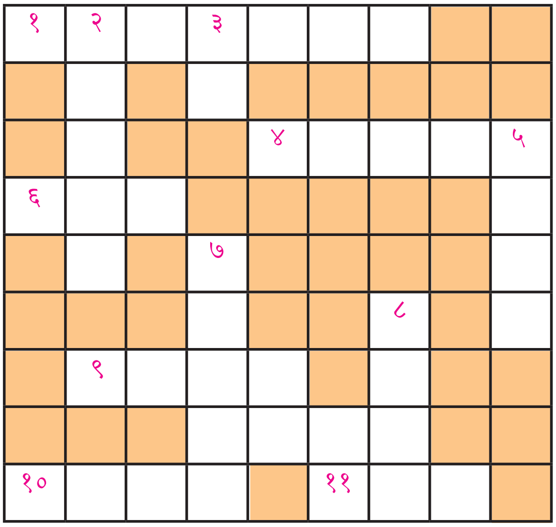

खड़े शब्द

२. ★★★★★ के पराक्रम का वर्णन प्रयाग के स्तंभलेख में पाया जाता है ।

३. महरौली के लौहस्तंभ पर ★★ नाम के राजा का उल्लेख पाया जाता है ।

५. पुष्यवर्मन ने ★★★★ का राज्य स्थापित किया ।

७. बाणभट्‌ट ★★★★★ के दरबार में राजकवि था ।

८. इंडो-यूनानी राजाओं में ★★★★ प्रसिद्‌ध राजा था ।

आड़े शब्द

१. ★★★★★★★ ने गुप्त साम्राज्य का विस्तार पश्चिमोत्तर में किया ।

४. हर्षवर्धन का एक संस्कृत नाटक ★★★★★

६. गुप्त राजवंश का संस्थापक ★★★ था ।

९. ★★★★ का विवाह वाकाटक राजवंश के रुद्रसेन द्‌वितीय से हुआ ।

१०. चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कार्यकाल में भारत में ★★★★ बौद्‌ध भिक्खु आया था ।

११. कनिष्क के दरबार में ★★★ प्रसिद्‌ध वैद्‌य था ।

6YNV3I

उपक्रम :

मौर्य साम्राज्य के पश्चात भारत में अनेक शासक हुए । उनके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो और तुम्हें उत्तम लगनेवाले राजा की भूमिका का अभिनय कक्षा में प्रस्तुत करो ।

* * *